National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 842-843

राजनीतिक समाजीकरणः सैद्धान्तिक विवेचन

डॉ0 सुनीता बघेल
एम0 पी0 सोशल साइंस रिसर्च इंस्टीट्यूट, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

राजनीतिक समाजीकरण का अध्ययन राजनीति के समाजशास्त्र की एक केन्द्रीय विषयवस्तु है। राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन करने वाले समाज वैज्ञानिकों ने इस तथ्य को विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है कि व्यक्ति किस प्रकार से राजनीतिक मूल्यों, व्यवहार प्रतिमानों और राजनीतिक विचारधाराओं को ग्रहण करता है। राजनीतिक प्रशिक्षण और राजनीतिक व्यवहार के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन राजनीतिक समाजीकरण के अध्ययन की केन्द्रीय विषयवस्तु है। समाजीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन न केवल व्यक्तिगत व्यवहार बल्कि राजनीतिक व्यवस्था की क्रियाशीलता को समझने के लिए आवश्यक है।

प्रत्येक शिशु किसी पीढ़ी, नृजातीय (संजातीय) समूह, जाति या सामाजिक वर्ग भौगोलिक स्थान तथा राष्ट्र में जन्म लेता है। समाज के सदस्य के रूप में अपना स्थान ग्रहण करता है, परन्तु जन्म के समय शिशु शारीरिक दृष्टि से असहाय और पूर्णतः बड़े लोगों पर निर्भर होता है। प्रारम्भ में माता–पिता व परिवार के अन्य सदस्य उसकी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं तथा अन्य लोगों से अन्तः क्रियाओं के परिणामस्वरूप ही उसका व्यवहार सीख द्वारा रूपान्तरित होता है। सीखने की वह प्रक्रिया, जो नवजात शिशु को एक सामाजिक प्राणी बनाती है, समाजीकरण कहलाती है(धर्मवीर, 2008:109)। प्रस्तुत अध्याय में राजनीतिक समाजीकरण के सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला गया है।

सामान्यतः राजनीतिक समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से राजनीतिक समुदाय के सदस्य अपने समाज की संस्कृति को आत्मसात करते हैं। इसके अन्तर्गत वे अपने शैशव काल से ही ऐसी अभिवृत्तियाँ, मान्यताएँ और व्यवहार के नमूने सीख लेते हैं जिनसे वे अपने समुदाय की राजनीतिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं को वैधता प्रदान करते हैं। अतः राजनीतिक समाजीकरण के परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने समाज के राजनीतिक जीवन के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण बनाता है, अपने समाज, राष्ट्र या राज्य के प्रति निष्ठा और सत्ता के प्रति लगाव का भाव विकसित करता है (गेना, 2008: 400)।

इस प्रक्रिया में व्यक्ति परिवार मित्र मंडली, शिक्षा संस्थान और अन्य बड़े–बड़े समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नागरिक तथा राजनीतिक जीवन में सहभागिता जनसम्पर्क के साधनों के प्रभाव तथा अनेक सभा संगठनों की उपस्थिति से इसकी पुष्टि होती है। राजनीतिक समाजीकरण के माध्यम से समाज अपने राजनीतिक मानकों, मान्यताओं और विश्वासों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाता है। यह जरूरी नहीं है कि इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप सभी व्यक्ति बने बनाए सांचों में ढल जाएं, परन्तु इससे राजनीतिक जीवन में निरंतरता बनी रहती है, और राजनीतिक प्रणाली नए दबावों और तनावों को सहन करने की क्षमता विकसित कर लेती है।

इस प्रकार राजनीतिक समाजीकरण को पदबंध का ऐसा सिद्धान्त मानना चाहिए जो व्यक्तियों के मन में मूल्यों, मानदण्डों तथा प्रवृतियों को विकसित करना चाहता है, ताकि उनमें अपनी राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विश्वास विकसित हो और उससे वे स्वयं को सुक्रियाशील नागरिक की तरह बना सके तथा साथ ही अपने उत्तराधिकारियों के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ सके (धर्मवीर, 2008: 114)।

राजनीतिक समाजीकरण के अर्थ के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य का अभाव है, विभिन्न विद्वानों ने इसे भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है।

सीग के शब्दों में: ''राजनीतिक समाजीकरण से अभिप्राय सीख की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रचलित राजनीतिक व्यवस्था द्वारा स्वीकृत राजनीतिक आदर्श एवं व्यवहार पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित होते है।''

रॉबर्ट सीगल के अनुसारः ''राजनीतिक समाजीकरण का लक्ष्य व्यक्तियों को इस ढंग से प्रशिक्षित अथवा विकसित करना है कि वे राजनीतिक समाज के सुकार्यशील सदस्य बन जाए।''

ग्रीन स्टेन के अनुसार, ''राजनीतिक समाजीकरण को राजनीतिक दृष्टि से सार्थक, सामाजिक अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं को औपचारिक या अनौपचारिक, आयोजित या अनायोजित रूप से ग्रहण करने की प्रक्रिया माना है।''

डेविड ईस्टन के शब्दों में, ''किसी प्रकार से एक प्रौढ़ पीढ़ी युवा पीढ़ी को अपने जैसे प्रौढ़ प्रतिरूप में ढालती है, यही समाजीकरण है।''

लेवाइन के अनुसार, ''राजनीतिक व्यवस्था में भाग लेने से निर्मित आवश्यक प्रेरकों, आदतों और मूल्यों को ग्रहण करना राजनीतिक समाजीकरण है।''

रश और अल्थाफ के अनुसार, ''राजनीतिक समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति राजनीतिक व्यवस्था से परिचित होता है तथा उसके राजनीतिक प्रत्यक्षीकरण और राजनीतिक घटनाओं के प्रति प्रतिक्रिया का निर्धारण होता है।''

पीटर मर्कल के शब्दों में, ''राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया को एक प्रकार की सामाजिक प्रक्रिया का स्वाभाविक अध्ययन माना है।''

हाइमन के शब्दों में, ''व्यक्ति के द्वारा समाज के विभिन्न अभिकरणों के माध्यम से सामाजिक प्रतिमानों के सीखने को राजनीतिक समाजीकरण कहा है।''

स्टेसी बी.के षब्दों में, समाजीकरण 'विकास की एक प्रक्रिया' है जिसके द्वारा एक व्यक्ति ज्ञान निपुणता विश्वासों, मूल्यों मनोंवृत्तियों एवं स्ववृत्तियों को प्राप्त करता है तथा उसे समाज के एक प्रभावषाली सदस्य के रूप में कार्य करने के योग्य बनाती है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते है कि राजनीतिक

समाजीकरण, शिशु को राजनीतिक दृष्टि से परिपक्व बनाने की एक प्रक्रिया है, चाहे वह किसी भी अभिकरण या अभिकरणों का परिणाम क्यों न हो।

राजनीतिक व्यवहार को सीखने की प्रक्रिया राजनीतिक समाजीकरण है। यह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक सांस्कृतिक रूप से मूल्यों और व्यवहार प्रतिमानों को ग्रहण करने की प्रक्रिया है। राजनीतिक समाजीकरण व्यक्ति का राजनीतिक संस्कृति में प्रवेश है। राजनीतिक संस्कृति में व्यक्ति का यह प्रवेश संवेगात्मक और अन्तर्निहित सीखने तथा प्रत्यक्ष राजनीतिक प्रशिक्षण के माध्यम से होता है। व्यक्ति का राजनीतिक प्रशिक्षण उसकी भावी राजनीतिक सहभागिता का आधार है। इस प्रकार राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति, राजनीति और संस्कृति को अन्तःसम्बन्धित करती है(स्टेबी,1978: 2)। राजनीतिक समाजीकरण ऐसी प्रक्रिया नहीं है, जो केवल बाल्यावस्था तक सीमित रहे। बल्कि यह प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति के विश्वास, निष्ठाएँ और राजनीतिक सत्ता के सम्बन्ध में उसकी अभिवृत्ति दिन–प्रतिदिन निर्मित होती रहती है। राजनीतिक समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा राजनीतिक संस्कृति के मूल्य विश्वास, आस्थाएँ और भावनाएँ, वर्तमान और आगामी पीढ़ियों को संचारित किए जाते हैं। यह प्रक्रिया ही व्यक्ति को राजनीतिक प्राणी बनाती है, इस प्रक्रिया से व्यक्ति के मानस में राजनीति के ज्ञानात्मक चित्र बनते हैं। राजनीति के सम्बन्ध में बने इन विचारों के आधार पर व्यक्ति राजनीतिक घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है और राजनीतिक जगत में घटित होने वाली घटनाओं का मूल्यांकन करता है।

अतः राजनीतिक समाजीकरण, व्यक्ति और व्यक्तियों के समूहों की राजनीतिक मनोवृत्तियों तथा मूल्यों का निर्धारण करता है और इससे व्यक्ति राजनीतिक व्यवस्था में निवेशक की भूमिका निभाने के लिए तैयार होता है। राजनीतिक समाज में व्यक्ति का राजनीतिक समाजीकरण जिस प्रकार का होगा उसी के अनुरूप उसकी राजनीतिक सक्रियता और सहभागिता में वृद्धि या कमी आएगी।

व्यक्ति का राजनीतिक ज्ञान उसे विभिन्न समूहों के राजनीतिक स्वार्थों और हितों के प्रति सजग बनता है तथा वह यह सीखता है कि राजनीतिक स्पर्धा के वातावरण में वह अपने विशिष्ट स्वार्थों और हितों की किस प्रकार पूर्ति करें या व्यापक हितों की पूर्ति के लिए अपने सीमित हितों और स्वार्थों का किस प्रकार परित्याग करें।

व्यक्ति का राजनीतिक ज्ञान और जागरूकता का स्तर, राजनीतिक घटनाक्रमों और राजनीतिक व्यवस्था के आधारभूत विशेषताओं के प्रति उसकी बोधगम्यता अन्ततोगत्वा शासन व्यवस्था में उसकी रूचि को प्रभावित करती है। वह शासन से अधिक सूचनाएँ, अधिक व्याख्या, अधिक प्रत्युत्तर प्राप्त करता है। जिनके परिणामस्वरूप शासन तंत्र अधिक उत्तरदायी और लोकपरक बनता है। अतः शासन के उत्तरदायित्व की एक महत्वपूर्ण आधारशिला व्यक्ति का राजनीतिक ज्ञान है (आमण्ड एण्ड वर्बा, 1963: 27)।

राजनीतिक समाजीकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। प्रत्येक समाज चाहे विकासषील हो या विकसित, अपनी नवीन पीढ़ी को समाज की स्वीकृत राजनीतिक संरचना के अनुरूप ढालना चाहता है। यद्यपि यह सच है कि राजनीतिक समाजीकरण की नींव व्यक्ति के विकास के प्रारम्भिक चरणों में रख दी जाती है फिर भी, वास्तविकता यह है कि यह प्रक्रिया जीवन–पर्यन्त चलती रहती है। इस प्रक्रिया के अनेक तत्व होते हैं जिनमें कुछ प्रकट व्यवहार में होते हैं तो कुछ प्रच्छन्न रहते हैं।

राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया समाज में आदर्षों और मूल्यों के प्रति सहमति निर्मित करके 'समाजिक सम्बद्धता' उत्पन्न करती है। राजनीतिक समाजीकरण द्वारा राजनीतिक संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण होता है। यह प्रक्रिया समाज में स्थिरता एवं निरन्तरता बनाये रखने में सहायक होती है तथा आवष्यक परिवर्तन लाने में भी सहायता प्रदान करती है। सांविधानिक एवं षान्तिपूर्ण ढ़ग से राजनीतिक अभिवृत्तियों एवं व्यवहार में परिवर्तन की प्रेरणा इस प्रक्रिया के माध्यम से ही प्रदान की जाती है। राजनीतिक समाजीकरण की अवधारणा से राजनीतिक व्यवस्था को स्थायी बनाने और परिवर्तन करने के साधन स्पष्ट हुए हैं। इससे यह पता चलता है कि वर्तमान व्यवस्था में कहाँ तक और कैसे संषोधन किया जा सकता है। किन्तु यह कहना उपयुक्त नही होगा कि यह परम्परा को बनाये रखने का साधन मात्र है अथवा एकांगी विचारधारा को मजबूत करने का माध्यम है। मार्क्सवादी विचारक इस अवधारणा को बुर्जुआ मस्तिष्क की उपज मानते है। अमरीकी समाजषास्त्री इसको विषेष रूप से महत्त्वपूर्ण ठहराते हैं।

वास्तव में कोई भी परिवर्तन लाने के बाद उसको समाज में फैलाने और जनता द्वारा स्वीकार करवाने के लिये भी राजनीतिक समाजीकरण ही एकमात्र साधन है। इसके अभाव में सरकार बलपूर्वक किसी भी सुधार को लाद नहीं सकती, कभी न कभी जनता उसे उखाड़ फेंकेगी। अन्त में यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक समाजीकरण राजनीतिक परिवर्तन को सम्भव बनाने की जनतन्त्रीय और मनोवैज्ञानिक प्रणाली है। यह प्रक्रिया राजनीतिक संस्कृति का निर्माण करती है और उसमें आवष्यकता के अनुरूप परिवर्तन उत्पन्न करती है। इससे नई पीढ़ी को राजनीतिक उत्तरदायित्व तथा कार्य भागों को अपनाने का साधन उपलब्ध होता है। इससे सरकार और जनता में सहयोग बढ़ता है।

संदर्भ

1. आमण्ड, जी ए एण्ड पॉवेल, जी बी (1966), कम्पेरेटिव पॉलिटिक्सः ए डेवलपमेन्ट एप्रोच, लिटिल ब्राउन एण्ड कम्पनी, बोस्टन पृ. 27।
2. आमण्ड, जी ए एण्ड पॉवेल, जी बी (1966), कम्पेरेटिव पॉलिटिक्सः ए डेवलपमेन्ट एप्रोच, लिटिल ब्राउन एण्ड कम्पनी, बोस्टन पृ. 74।
3. आमण्ड, जी ए एण्ड वर्बा, एस (1978), द सिविक कल्चर, प्रिन्सटिऑन यूनिवर्सिटी प्रिन्सटिऑन, पृ. 27।
4. अग्रवाल, सुरेश (2005), जनसंचार माध्यम, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 12–15।
5. भाम्बरी, सी पी (1973), द अरबन वोटरः म्यूनिसिपल इलेक्शन इन राजस्थान. अ इम्पेरिकल स्टडी, नेशनल पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृ. 173–174।
6. चापी, एल (1971), पेरेन्टल ऑफ चिल्ड्रन न्यूज मीडिया, अमेरिकन बिहेवियर साइन्टिस्ट, पृ. 83।
7. धर्मवीर, (2008), राजनीतिक समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
8. ईस्टन, डेविड, (1986), दी थ्योरिटिकल रिलिवेन्स ऑफ पॉलिटिकल सोशलाईजेशन, जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, पृ. 218।
9. गेना, सी बी (2008), तुलनात्मक राजनीतिक, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.,नोएडा (यू. पी.)।